विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर
समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८९

नित नवल
लल्लन प्रसाद ठाकुर

नाटक, एकांकी, गीतिनाटिका,
गीत–लोरी आ हिन्दी रचनाक
साहित्यिक आ स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन

रंगशिल्प | सामाजिक न्याय | भाषा

LXXXIX

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

गजेन्द्र ठाकुर

समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८९ · LXXXIX

नित नवल लल्लन प्रसाद ठाकुर

नाटक, एकांकी, गीतिनाटिका, गीत–लोरी आ हिन्दी रचना

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२७

गजेन्द्र ठाकुर

समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-८९ • LXXXIX

नित नवल

लल्लन प्रसाद ठाकुर

चारि नाटक, चारि एकांकी, तीन गीतिनाटिका,

तेरह गीत-लोरी आ हिन्दी रचनाक सम्पादकीय अध्ययन

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२७

प्रकाशन-विवरण

ग्रन्थ-शृंखला : गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड-८९ · LXXXIX

समीक्षाधीन ग्रन्थ : नित नवल लल्लन प्रसाद ठाकुर

उपशीर्षक : नाटक, एकांकी, गीतिनाटिका, गीत-लोरी आ हिन्दी रचनाक आलोचनात्मक पुनर्पाठ

मूल समीक्षात्मक अध्ययनक लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

एहि खण्डक सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

प्रकाशकीय संस्था : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादकीय संस्करण : विदेह, २०२७

© 2027 Gajendra Thakur / Preeti Thakur

पुस्तक-विन्यास : ६ × ९ इन्च; देवनागरी युनिकोड

समीक्षाक आधार आ सीमा

एहि खण्डक आधार गजेन्द्र ठाकुरक 'नित नवल लल्लन प्रसाद ठाकुर' नामक उपलब्ध आलोचना-ग्रन्थ अछि। ओहि ग्रन्थमे चारि मैथिली नाटक, चारि मैथिली एकांकी, तीन गीतिनाटिका, तेरह गीत-लोरी आ हिन्दी खण्डक सात रचनाक अलग-अलग साहित्यिक अध्ययन अछि। प्रस्तुत सम्पादकीय समीक्षा मूल रचनासभ, उपलब्ध समालोचना आ एहि पुनर्पाठक तीन स्तरकेँ फराक राखैत अछि।

मूल नाटच-पाठ, प्रस्तुति-अभिलेख अथवा समस्त गीतक संगीतात्मक प्रदर्शनक स्वतन्त्र पूर्ण जाँच एहि खण्डक आधार नहि अछि। तथ्य आ उद्धरणकेँ उपलब्ध अध्ययनक कथनक रूपमे ग्रहण कएल गेल अछि; जतए ऐतिहासिक निर्णयक अतिरिक्त परीक्षण चाही, ततए ओहि सीमाकेँ स्पष्ट राखल गेल अछि। उद्देश्य प्रशंसाक पुनरुक्ति नहि, प्रमाण, रूप, सामाजिक अर्थ आ व्याख्याक अन्तर्विरोधक परीक्षण अछि।

विस्तृत विभाग-क्रम

प्रथम विभाग : समग्र अध्ययनक पाठाधार आ सम्पादकीय कसौटी

द्वितीय विभाग : ‘बड़का साहेब’ आ ‘लौंगिया मिरचाइ’

तृतीय विभाग : ‘बकलेल’ आ ‘आदि वा अन्त’

चतुर्थ विभाग : चारि मैथिली एकांकीक पुनर्पाठ

पंचम विभाग : तीन गीतिनाटिकाक गीत-संवाद आ व्यंग्य

षष्ठ विभाग : तेरह गीत–लोरीक स्वर, शिल्प आ सामाजिक अनुभव

सप्तम विभाग : हिन्दी नाटक, एकांकी आ स्मरणगीत

अष्टम विभाग : साझा साहित्यिक प्रश्न आ समेकित निर्णय

सन्दर्भ-विवरण

समीक्षित विधा : मैथिली नाटक · एकांकी · गीतिनाटिका · गीत–लोरी · हिन्दी रंगरचना आ कविता

प्रथम विभाग : समग्र अध्ययनक पाठाधार आ सम्पादकीय कसौटी

१. आठ समीक्षा-अध्याय आ बहुविधात्मक कृतित्व

गजेन्द्र ठाकुरक संकलन आठ विस्तृत समीक्षा-अध्यायमे विन्यस्त अछि; मुदा रचनाक संख्या अध्यायक संख्यासँ बहुत बेसी अछि। पहिल चारि अध्याय चारि मैथिली नाटकक स्वतंत्र अध्ययन छथि, पाँचम अध्याय चारि एकांकीक, छठम तीन गीतिनाटिकाक, सातम तेरह गीत–लोरीक आ आठम हिन्दी नाटक, एकांकी तथा स्मरणप्रधान कविताक। ई विविधता लल्लन प्रसाद ठाकुरक रंग-आ गेय लेखनकेँ एकटा मात्र विधागत श्रेणीमे बन्हबाक प्रतिरोध करैत अछि।

एहि समीक्षासभक सम्बन्ध कथ्य-साम्यसँ अधिक शिल्पक विविधतामे खोजल जाएबाक चाही। एक नाटकमे बन्द फाटक आ नामपट्ट दृश्य-रूपक बनैत अछि, दोसरमे लोक-मिरचाइ सामाजिक कटुताक रूपक बनैत अछि, गीतिनाटिकामे रुपैयाक आवर्तन नाटचगति रचैत अछि, आ लोरीमे ध्वनि एवं सम्बोधन कथनक केन्द्रीय साधन बनैत अछि। समान प्रश्न रहितो माध्यम बदललासँ आलोचनाक कसौटी बदलैत अछि।

२. मूल कृति, आलोचकक अध्ययन आ सम्पादकीय निर्णय

पहिल स्तर लल्लन प्रसाद ठाकुरक साहित्यिक रचना थिक; दोसर स्तर ओकर विषय-विन्यास, पात्र, रंगसङ्केत, गीतक लय आ साहित्येतिहास पर गजेन्द्र ठाकुरक विवेचना; तेसर स्तर एतय प्रस्तुत सम्पादकीय पुनर्मूल्यांकन। ई स्तर एक-दोसराक स्थान नहि लऽ सकैत। नाटकीय पात्रक वाणीकेँ नाटककारक स्वीकृत सिद्धान्त मानब जतेक असावधान, तहिना एक आलोचकक पुनर्कथनकेँ मूल पाठक शाब्दिक प्रमाण बुझबो।

उदाहरणस्वरूप मंचनक सूचना, प्रकाशित संस्करण, निर्देशकक नाम अथवा ऐतिहासिक प्रतिष्ठाक उल्लेख उपलब्ध अध्ययनमे भेटैत अछि। ओहि उल्लेखक आधारपर रचनाक सामाजिक स्थिति पर विचार सम्भव अछि; मुदा वास्तविक अभिनय, दर्शकक प्रतिक्रिया अथवा पाठ-भेदक अन्तिम निर्णय लेल

पृथक अभिलेख चाही। सम्पादकीय मर्यादा एतय आलोचनाकेँ कमजोर नहि करैत; ओकर प्रमाणिक दायरा स्पष्ट करैत अछि।

३.सामाजिक विषय आ कलात्मक परिणामक अन्तर

दहेज, नौकरी, प्रतिष्ठा, स्त्री-आत्मनिर्णय, श्रम, भ्रष्टाचार आ भाषिक पहिचान रचनासभमे बारम्बार लौटैत अछि। विषयक पुनरावृत्ति मात्रसँ कोनो नाटक सफल अथवा असफल नहि मानल जा सकैत। प्रश्न ई अछि जे कथा ई विषय किछु पात्रक निर्णयमे, किछु मंचीय वस्तुमे, किछु संवादक प्रत्युत्तरमे आ किछु अन्तक विरोधाभासमे कोना रूपान्तरित करैत अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक सर्वोत्तम विश्लेषण ओहि क्षणमे उभरैत अछि जतए ओ नैतिक सन्देश आ नाटय-प्रभावक भेद राखैत छथि। उपदेशप्रधान संवाद दर्शककेँ तुरन्त अर्थ दऽ सकैत अछि, मुदा अनुभवक असमाप्त प्रश्नकेँ दबा सेहो सकैत अछि। एहि खण्डमे प्रत्येक रचनाक मूल्यांकन लेल पात्रक स्वतन्त्रता, दृश्यगत विश्वसनीयता, कथाक गति, भाषा आ रचनात्मक अनिश्चितताकेँ बराबर महत्त्व देल गेल अछि।

द्वितीय विभाग : 'बड़का साहेब' आ 'लौंगिया मिरचाइ'

४. 'बड़का साहेब' : फाटक, पत्र आ नामपट्टक सामाजिक व्याकरण

'बड़का साहेब'क अध्ययन नाटकक आरम्भिक बन्द फाटक आ अन्तिम बदलबैत नामपट्टकेँ समूची कथा-रचनाक दू निर्णायक छोर मानैत अछि। बालचन्द्र झाक सरकारी पद हुनका ग्रामीण सम्बन्धी लोकसँ दूर करैत अछि। छेदी झाक पुरान आत्मीय सम्बोधन सार्वजनिक प्रतिष्ठाक नब भाषासँ टकराइत अछि; चूड़ामणिक रोजगार-संकट एहि दूरीकेँ केवल भावात्मक नहि, संस्थागत समस्या बनबैत अछि।

चूड़ामणि अपमानित भऽ नियुक्तिपत्र फाड़ैत छथि, फेर प्रशासनिक परीक्षामे सफल होइत छथि। मुदा अन्तिम परिवर्तनक संकेतानुसार ओ स्वयं ओही उच्च पदक संस्कारकेँ अपनबैत छथि जकर विरोध कएने छलाह। एहि उलटफेरसँ नाटक नायकक नैतिक विजयपर समाप्त नहि होइत; पद पबिते पुरान

अपमानक व्यवहार पुनः उगि सकबाक प्रश्न छोड़ैत अछि। ऐ आख्यानिक चक्रक पाठ आलोचकक एक प्रमुख उपलब्धि अछि।

५. छेदी, मीना, मिक्की : सम्बन्धक पक्ष, स्वतन्त्रताक सीमा

छेदीक आत्मीयता सामाजिक स्मृतिसँ उपजैत अछि, मुदा अपन गामक रीति-पद्धतिकेँ सार्वभौम मानबाक आग्रहमे ओकर सीमा सेहो अछि। मिक्की द्वारा पुरान विवाह-वचन स्वीकार नहि करब आ गरीब युवकक उपहास करब—दू अलग आचरण छथि। पहिलमे युवा स्त्रीक निर्णयाधिकार अछि, दोसरमे वर्गीय तिरस्कार। एहि दुनूकेँ एकहि 'आधुनिकता-विरोध'क चौखटामे राखब नाटकक अर्थ संकुचित करत।

मीना आ रानी पुरुषसत्तात्मक सरकारी-पारिवारिक संसारमे अवसर जुटबैत छथि। हुनकर हस्तक्षेप व्यक्तिगत न्याय देबाक साधन बनैत अछि, मुदा सम्बन्धक सिफारिश संस्थागत निष्पक्षताक विकल्प नहि। अयथार्थवादी सम्मानप्राप्ति आ दहेजक सहारे सम्पन्न विवाह एकर तनाव बढ़बैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक आलोचनामे एहि नैतिक द्वैतक पहचान महत्त्वपूर्ण अछि।

६. रंगभाषा : 'बी.सी.', 'बालो' आ सामाजिक दूरी

नाटकमे अंग्रेजी संक्षिप्त नाम, ग्रामीण सम्बोधन, सेवकक बोली आ पारिवारिक आदेश एकर सामाजिक श्रेणीकरणक ध्वन्यात्मक रूप छथि। 'बालो' कहब बालचन्द्रक पदवीसँ पुरान व्यक्तिकेँ पुनः सम्बोधित करबाक प्रयत्न अछि; संक्षिप्त नाम आधुनिक सार्वजनिक व्यक्तित्वक आवरण बनैत अछि। हँसीक स्रोत भाषिक गलतफहमी अवश्य अछि, मुदा हँसीक दिश निर्धारण के करत—एहि प्रश्नमे नाटकक असल सामाजिक तीक्ष्णता अछि।

बाहरी बरामदा आ भीतरी बैठकक मंच-विभाजन, नियुक्तिपत्र फाड़बाक संक्षिप्त क्रिया, नृत्यक छाया आ बदलल नामपट्ट दृश्य-सम्पादनक प्रभावी आधार छथि। तथापि निर्णायक चरित्र-परिवर्तनक मध्यवर्ती प्रक्रिया कम देखाए तऽ संकेतात्मक अन्त दर्शक लेल अति शीघ्र होइ सकैत अछि। एहि शिल्पगत आरक्षणक बिना नाटकक राजनीतिक व्यंग्यक मूल्यांकन अधूरा रहत।

७. 'लौंगिया मिरचाइ' : लोक-उपमान सँ विवाह-बाजार धरि

'लौंगिया मिरचाइ'मे मध्यस्थ घूटरक नामसँ जुड़ल लोक-उपमान विवाहक रसपूर्ण सौदा आ ओकर कटु सामाजिक परिणामक बीच सम्बन्ध बनबैत अछि। सरकारी अभियन्ता दिवाकरक आर्थिक पेशकश, कन्याक दाम-निर्धारण, अफसर बरक प्रतिष्ठा आ दहेज-विरोधक घोषणासभ एकहि कथामे जटिल सम्बन्ध स्थापित करैत छथि। धनक चमक आरम्भमे आदर-आतिथ्यक रूप लैत अछि, पछाति परिवारक अन्तरंग विश्वास नष्ट करय लगैत अछि।

आलोचनामे पचास हजार टाकाक तथाकथित परोपकार विशेष अर्थवान अछि। रकम उपकारक नैतिक भाषा धारण करैत अछि, मुदा ओकर उपयोग विवाह-सम्बन्ध बनबए लेल होइत अछि। एतय नाटक बाह्य दहेज आ परोक्ष दहेजक अन्तर खुला करैत अछि। प्रश्न केवल घूटरक लोभ नहि; ओकर सौदाकेँ विश्वासयोग्य बना देनिहार समाजक पद-प्रतिष्ठा-आधारित संरचना थिक।

८. घूटर, फूकना आ वर्गीय प्रतिपक्ष

घूटर चतुर मध्यस्थ छथि, मुदा एकर हँसीकेँ पूरा समाजक भ्रष्टाचारक कारण मानल जाए तँ अन्य पात्रक निर्णयक जिम्मेदारी ओझराएत। दिवाकरक आकांक्षा, शिक्षित परिवारक 'स्टेटस'क आग्रह आ पदक बाजारू मूल्य ओहि बिचौलियाकेँ शक्ति दैत अछि। फूकना सन श्रमजीवी पात्रक सामान्य वाक्य कखनो अधिक सूझबूझबला विवेक प्रस्तुत करैत अछि; वर्गीय स्थान आ नैतिक निर्णयक एहि अन्तरकेँ आलोचक ठीक सँ पहचानैत छथि।

नरेन्द्रक विरोधकेँ पूर्ण समाधान मानब कठिन अछि, कारण निजी नैतिकता आर्थिक एवं वैवाहिक अपेक्षाक जालसँ पूर्ण मुक्त नहि। रीताक उपभोग-संस्कृति सम्बन्धी व्यवहारक आलोचना करैत समय स्त्रीक स्वतन्त्र इच्छा आ वर्ग-प्रदर्शनक आग्रहकेँ पृथक देखबाक आवश्यकता अछि। अन्तिम घर-छोड़बाक प्रसंग सामाजिक उपकारक असफलताक करुण उद्घाटन करैत अछि; नाटकक मूल्य एही धक्कामे अछि, न कि केवल उपदेशक सफलतामे।

तृतीय विभाग : 'बकलेल' आ 'आदि वा अन्त'

९. 'बकलेल' : अपमानसूचक नामक नैतिक पुनर्निर्धारण

'बकलेल'मे सामान्य शैक्षिक उपलब्धि आ मनुष्यक वास्तविक उत्तरदायित्वक बीच तीक्ष्ण अन्तर उठैत अछि। गुणानन्दक उपनाम आरम्भमे उपहासक भाषा अछि, मुदा घरक संकट बढ़लापर ओही युवक मुरारीक सेवा आ श्रमक माध्यमसँ अपन नैतिक स्वायत्तता सिद्ध करैत छथि। अधिक औपचारिक शिक्षा पओनिहार भाइसभक दूरी एहि उलट अर्थकेँ आरो तीक्ष्ण बनबैत अछि।

आलोचनाक प्राप्ति ई अछि जे उपनामक अर्थ समयक संग बदलैत देखाओल गेल अछि। हास्यक बाद करुणा आ अन्ततः शर्मक क्षण अबैत अछि; कथित मूर्ख आ कथित बुद्धिमान बीच समाजक निर्णय उलटि जाइत अछि। मुदा गुणानन्दकेँ निष्कलंक पवित्र प्रतीक बनाकेँ देखबो पर्याप्त नहि। हुनकर श्रमक सामाजिक सुरक्षा, अधिकार आ इच्छाक स्वतन्त्र क्षेत्र कतेक विकसित भेल—ई प्रश्न समीक्षा लेल शेष अछि।

१०. रोटी, पत्र आ समय-छलाँग : 'बकलेल'क नाट्य-संरचना

भोजनक कमी, खुद्दी, रोटीक टुकड़ा आ श्रमक रोजमर्रा काज नाटकमे अभावकेँ दर्शनीय रूप दैत अछि। पत्रक माध्यमसँ अनुपस्थित सन्तानसभक उपस्थिति बनैत अछि; दर्शक घरक खालीपनकेँ पत्रक स्वर सँ भरैत सुनैत छथि। समय-छलाँग पारिवारिक उत्तरदायित्वक परिवर्तनकेँ एक प्रबल संरचनात्मक साधन बनबैत अछि।

तथापि पात्रक बदलबैत व्यवहारक पर्याप्त कारण-क्रम नहि भेटलासँ नैतिक विरोध बहुत सरल भऽ सकैत अछि। नाटककार शिक्षा-विरोधी नहि, शिक्षाक संग करुणा आ सामाजिक बोध जोड़बाक आग्रह करैत छथि—ई भेद अधिक उपयोगी अछि। गजेन्द्र ठाकुरक समीक्षामे सामाजिक कलंकक भाषा, श्रमक गरिमा आ दृश्यगत वस्तु-व्याकरणक एकत्र जाँच एहि नाटककेँ भावुक दृष्टान्तसँ बाहर लऽ जाइत अछि।

११. 'आदि वा अन्त' : ईमानदारीक संस्थागत अकेलापन

'आदि वा अन्त'क केन्द्रमे करुणेश छथि, जे अपन अभियन्ता-पदक काममे ईमानदारी मानैत छथि, मुदा बेटी डौलीक विवाह-संकट हुनका आर्थिक तथा सामाजिक दबावमे डालैत अछि। विवाहक दर, ठेकेदारक कागज, घरक लोकलाज आ नैतिक आदर्श एकहि समय सक्रिय होइत अछि। एतय ईमानदारी व्यक्तिक निजी गुण रहि नहि जाइत; सामाजिक सहयोग नहियेँ रहलापर ओकर टिकाउपन कठिन होइत अछि।

नाटकक शीर्षक परिवर्तनक प्रश्न छोड़ैत अछि : अन्त होइत अछि कि नब आरम्भ? डौलीक हस्तक्षेप तात्कालिक संकट दूर करैत अछि, मुदा पात्र–नाटककार–दर्शक संवाद समाधानक पर्याप्तता पर प्रश्न उठबैत अछि। एहि मेटा-रंगीय मोड़केँ आलोचनामे विशेष महत्त्व भेटबाक चाही, कारण मंच स्वयं अपन सुखान्तक जाँच आरम्भ करैत अछि।

१२. कंचन, डौली, मध्यस्थ आ रिश्वतक दस्तावेज

कंचनक चिंता केवळ नैतिक दुर्बलता नहि; बेटीकेँ विवाह-बाजारक असुरक्षासँ बाहर निकालबाक घरेलू व्याकुलता सेहो अछि। डौलीक आत्मनिर्णय स्त्री-पात्रकेँ पिता-पतिक साधारण दायित्वक विषयसँ निर्णयकारी व्यक्तिमे बदलैत अछि। मुदा अन्तिम सहमतिक स्वतंत्रता कतेक व्यापक अछि, एकरा परीक्षणविहीन आदर्श बनायब उचित नहि।

घनश्याम वकील, गुलाबमल, मास्टर आ आन पात्र सार्वजनिक सदाचार आ निजी लाभक अलग-अलग रूप देखबैत छथि। बिलपर हस्ताक्षर करबाक सम्भावित क्रिया अमूर्त भ्रष्टाचारक अपेक्षा बेसी तीक्ष्ण दृश्य-संकेत अछि। हास्यक कथा-जगतमे कानून, रिश्वत आ विवाह-सामग्रीक भाषाक मिश्रण एक सहयंत्र बना दैत अछि। आलोचक जँ एहि कागज, मंच-संकेत आ निर्णयक क्रमकेँ साथ पढ़ैत छथि तँ नाटकक उपलब्धि खुलैत अछि।

चतुर्थ विभाग : चारि मैथिली एकांकीक पुनर्पाठ

१३. 'चन्दा' : स्वेच्छा सँ वसूली धरि सार्वजनिक भाषाक रूपान्तरण

'चन्दा'क एकांकीमे विजय बाबूक छुट्टीक दिन अलग-अलग दान-माँगनिहार टोली घरक देहरी पार करैत अछि। सांस्कृतिक कार्यक्रम, धार्मिक उद्देश्य, बाढ़ि-पीड़ितक सहायता आ अन्ततः हथियारक भय—ई क्रम समाजसेवाक शब्दकेँ बदलैत दबावक भाषामे परिणत करैत अछि। आरम्भिक दान-आग्रहक स्थान अन्तिम वसूली लेइत अछि।

एहि घटनाक कलात्मक युक्ति पुनरागमन अछि : प्रत्येक आगन्तुक पहिने परिचय दैत अछि, फेर नैतिक अधिकार जतबैत अछि, अन्ततः गृहस्थक स्वीकृतिपर हावी होइत अछि। गणना, रसीद आ रजिस्टर सार्वजनिक विश्वसनीयताक वस्तु प्रतीत होइतहुँ झूठक आवरण बनि सकैत अछि। नाटक दानक परम्पराक विरोध नहि; स्वेच्छा, पारदर्शिता आ सीमित आयक सम्मानक माँग करैत अछि।

१४. 'ग्रीन रूम' : अभिनयक पाछाँक सामाजिक अभिनय

'ग्रीन रूम'मे मंचपर चढ़बाक पूर्वक तैयारी स्वयं नाटकक कथ्य बनैत अछि। अभिनेता, वेशभूषा, मुकुट, गदा, चश्मा, तौलिया, अभिभावक आ आयोजनक संकट क्रमशः बढ़ैत अछि। कथित 'असफल कलाकार'क हास्यक पाछाँ रिहर्सल, भूमिका-ज्ञान, सज्जा आ सांस्थनिक जिम्मेदारीक कमी सेहो देखबाक चाही।

एकांकीक विशिष्ट उपलब्धि ई अछि जे सार्वजनिक नाटकक सज्जा आ निजी व्यक्तिक आग्रह एकहि ग्रीन रूममे भिड़ैत अछि। मुदा महिला अभिभावक अथवा शौकिया कलाकारक उपहासकेँ अन्तिम सामाजिक सत्य माननलासँ रंगकर्मक श्रमक असमान बँटवारा छुपि जाइत अछि। रूपगत आत्मव्यंग्य रचनाकेँ जीवित रखैत अछि, आ आलोचनात्मक प्रश्न एहि परिधिक विस्तार करैत अछि।

१५. ‘सूटकेस’ : सन्देह, प्रमाण आ राजकीय जवाबदेही

‘सूटकेस’ एक वस्तुकेँ सार्वजनिक सन्देहक केन्द्र बनबैत अछि। शासनक पदाधिकारी, विरोधी पक्ष, पत्रकार आ पुलिसक भूमिका क्रमशः एहन दबाव उत्पन्न करैत अछि जे वस्तुक रहस्य खोलबाक पहिने नैतिक निर्णय देबाक प्रवृत्ति बढ़ि जाइत अछि। मन्त्रीक कथन सत्य मानि लेब जतेक अनुचित, केवल अफवाहपर आरोप निश्चित मानबो ओतबे जोखिमपूर्ण अछि।

एकांकीमे चाबी आ स्वामित्व-साक्ष्यक जाँच कथा-निर्णयक एक आवश्यक उपकरण अछि। न्यायपूर्ण सार्वजनिक आलोचनाक अर्थ प्रश्न बन्द कऽ देब नहि, प्रश्नकेँ प्रमाणक कसौटी पर आगाँ बढ़ायब थिक। एहि भेदक कारण ई लघु नाटक राजनीतिक व्यंग्यसँ संगहि प्रमाण-विवेकक नाटकीय अभ्यास बनैत अछि।

१६. ‘मैथिली फिल्म’ : कला-आकांक्षा आ निर्माणक असंगति

‘मैथिली फिल्म’क कथा चलचित्र बनेबाक अन्तिम सफलताक नहि, कलाकार चुनबाक संकटपूर्ण प्रक्रियाक अछि। निर्माता, निर्देशक, पण्डितक प्रतिष्ठा, लोकप्रिय गीतक आग्रह, नायिका-चयन, बाल कलाकारक परीक्षा आ खलनायकक कल्पना—ई सभ मिश्रित अपेक्षा कलाकारक तैयारीक स्पष्ट मापदण्ड नहि छोड़ैत। स्थानीय कलाक उत्साह व्यवस्थाक अस्पष्टतासँ टकराइत अछि।

नाटकक हास्य शौकिया प्रतिभापर केन्द्रित लगैत अछि, मुदा ओकर वास्तविक प्रश्न उद्योगगत ढाँचा अछि : पात्रक लिखित रूपरेखा, अभिनय-प्रशिक्षण, वित्तीय योजना, बाल-अभिनेता सुरक्षा आ निर्देशकक निर्णय ककरा हाथमे? गजेन्द्र ठाकुरक अध्ययन एकांकीकेँ केवल हँसीक दृष्टान्त नहि, क्षेत्रीय चलचित्रक सांस्कृतिक अवसंरचनाक प्रश्न बनबैत अछि।

पंचम विभाग : गीतिनाटिका : आवर्तन, मोलभाव आ प्रतिवचन

१७. 'सभागाछी' : प्रतीक्षारत वर आ स्त्रीक अनुपस्थिति

'सभागाछी'क गीतसंवादमे पिता, युवक, सहयोगी आ घटकक आवाज अछि; विवाह-योग्य युवकक बारम्बार आगमनक बादो संबंध निश्चित नहि होइत। पिताक धन-प्रधान अपेक्षा आ घटकक अस्वीकार विनिमयक असफल चक्र बनबैत अछि। कथा-विकास घटना-बाहुल्यसँ नहि, गेय आवर्तन आ संवादक टकरावसँ होइत अछि।

एहि लघु रचनामे उपयुक्त विवाहक चर्चा सर्वथा पुरुष-स्वरमे चलैत अछि; सम्भावित वधूक इच्छा प्रत्यक्ष उपस्थित नहि। आलोचनाक उत्तरदायित्व एहि मौनकेँ चिन्हब अछि। 'सभागाछी'क सांस्कृतिक संकेत सौराठ-सभावर विचारक अवसर दैत अछि, मुदा विशिष्ट स्थल समानता स्वतंत्र पाठ-साक्ष्य बिना घोषित नहि कएल जा सकैत।

१८. 'साढ़ूनामा' : आत्मव्यंग्य अथवा स्त्री-विरोधी हास्य?

'साढ़ूनामा' एकल पुरुष-वक्ताक गीतात्मक नाटिका अछि। नब विवाहसँ जुड़ल रोमानी अपेक्षा, ससुरालक आदर्श छवि, घरेलू असुविधा आ मोहभंग हास्यक क्रम बनबैत अछि। साढ़ूसँ प्रत्यक्ष सम्बोधन एकर मंचीय आत्मीयता रचैत अछि; एकहि आवाजक बदलैत स्वर दृश्यात्मक गतिविधिक कमीकेँ पूरैत अछि।

मुदा वक्ताक अनुभव आत्मकथात्मक अधिकार ग्रहण करिते पत्नी आ सासुक प्रति व्यंग्य एकतरफा होइ सकैत अछि। दर्शकक हँसी ककर पक्षमे अछि—एहि प्रश्नक बिना नाटिकाक आलोचना अधूरी अछि। पुरुषक असफल अपेक्षाकेँ स्वीकार करब आ स्त्रीक देह-व्यवहारक अपमानकेँ सामान्य बनायब एक बात नहि।

१९. 'घटकैती' : रुपैयाक आरोह आ मातृत्वक प्रतिप्रश्न

'घटकैती'मे पिताक दहेज-माँग पाँच, दस, बीस आ पच्चीस हजारक आरोहमे प्रकट होइत अछि। पिता बेटाक पालन-पोषण, शिक्षा आ माताक कष्टकेँ लगानीक हिसाब बनबैत छथि; घटक जवाबमे पिताक अपन जन्मक समय मातृकष्टक मूल्य पूछैत अछि। एहि प्रतिवचनसँ गीतिनाटिकाक मुख्य नैतिक उलटफेर उत्पन्न होइत अछि।

रचना अपन तर्कक बल सामाजिक बहसक गेय संरचनासँ पबैत अछि। रकमक आवर्तन हर बेर नब औचित्य रचैत अछि, आ घटकक प्रश्न पूरा गणनाकेँ प्रश्नांकित करैत अछि। ई संक्षिप्त रूपक दहेज-विरोधक उपदेशसँ बेसी प्रभावी होइत अछि, कारण श्रम आ मातृत्वकेँ विक्रेय वस्तु मानबाक असंगति पात्रक आफ्नहि तर्कसँ सामने अबैत अछि।

षष्ठ विभाग : तेरह गीत-लोरीक स्वर, शिल्प आ सामाजिक अनुभव

२०. 'संकल्प लिय' आ भाषिक सार्वजनिकता

'संकल्प लिय'क सामूहिक सम्बोधन मैथिली भाषाक अधिकारक माँगकेँ गेय आन्दोलनक रूप दैत अछि। शांतिमय प्रयास, जनप्रतिनिधिसँ संवाद आ अधिक प्रखर प्रतिरोधक सम्भावना एक क्रममे उपस्थित अछि। रचना पढ़ैत समय ओकर ऐतिहासिक माँगक समय आ पछिला संवैधानिक स्थितिक भेद स्पष्ट रहबाक चाही; गीतक पाठकेँ अखबारक अद्यतन विधान मानल नहि जा सकैत।

एहि गीतमे 'हम'क सामूहिकता वक्ताक वैयक्तिक मनःस्थितिक बदला भाषिक समुदायक मनोगत एकता बनबैत अछि। आवर्तन नारा मात्र नहि, निर्णयक पुनःपुष्टि थिक। आलोचनाक प्रश्न ई अछि जे आवाजक सामूहिकता भिन्न सामाजिक स्थितिक मैथिलीभाषी लोकक अनुभूति समेटैत अछि कि अधिकारक एक आदर्श स्वरमे सबकेँ विलीन करैत अछि।

२१. लोरी, बालभाषा आ ध्वनि : 'हाथी घोड़ा', 'छुक छुक' आ 'गोर-गोर'

'तोरे लेल अनलहुँ हाथी घोड़ा'मे निनियाँ, चान-मामा, पारिवारिक कथा आ शिशुक भविष्यक कल्पना एक लयमे भेटैत अछि। 'छुक छुक' रेलगतिक अनुकरण, सिटी आ स्टेशनक दृश्यसँ बालमनक श्रवण-जगत बनबैत अछि। 'गोर-गोर-गोर सब छै गोर'मे तुकान्तक घरेलू खेल अपन लोकक परिहास रचैत अछि। एहि तीनू रचनामे शब्दक ध्वनि कथ्यक समान महत्त्व रखैत अछि।

बालगीतक समीक्षा लेल नैतिक उद्देश्य मात्र पर्याप्त नहि। लोरीक मुखड़ामे स्पर्श, निद्रा आ सम्बोधनक नजदीकी अछि; रेलगीतक ऊर्जामे गति आ समूहक विविधता; परिहासक गीतमे सौन्दर्यक गोरपन-आधारित रूढ़ मान्यता सेहो जाँचबाक विषय अछि। कोनो रचनाक संभावित धुन मूल पाठसँ पूर्ण रूपेँ निश्चित नहि कएल जा सकैत; छन्द-लयक पठन आ वास्तविक संगीत-प्रदर्शन अलग साक्ष्य माँगैत अछि।

२२. खेत, नदी आ ऋतु : 'लालमुनियाँ' आ 'हैया रे'

'लालमुनियाँ'क धान-पकनि, श्रमिकक आगमन आ ग्रामीण उत्सव प्रकृतिक सौन्दर्य आ जीविकाक श्रमकेँ एक साथ रखैत अछि। 'हैया रे'मे माँझीक पुकार, नदी, सावनक हवा आ प्रेम-विरह गेय प्रतीक बनैत अछि। दुनू गीतमे बाहरी संसार मनक भावसँ पृथक नहि, गीतक लयक भीतर दैहिक काम आ आकांक्षाक साथ उपस्थित अछि।

धानक बाली सुन्दरताक बिम्ब अछि, मुदा ओकर उत्पादन श्रमिकक श्रमपर टिकल अछि। नावक ताल कार्यगीतक संभावना जनबैत अछि, मुदा वास्तविक नाविक-समूह द्वारा गाओल धुनक दस्तावेजक अभावमे एहन दावा निश्चित नहि। गजेन्द्र ठाकुरक अध्ययने एहि साक्ष्यगत सावधानीक संग सौन्दर्य आ अर्थशास्त्रक संयुक्त पठनक बाट सुझबैत अछि।

२३. विरहक बदलैत वक्ता : चन्दा, फगुआ आ 'मोन ने लागय'

'बीतल दिन सभ मोन पड़ैया' आ 'हे रे चन्दा'मे अनुपस्थित प्रियक स्मृति, परदेशक दूरी आ सन्देश-पहुँचबाक इच्छा गीतक भाव बनैत अछि। 'सब एलय

फगुआमे सजना'मे सामूहिक उत्सवक उल्लासक बीच नवविवाहिताक एकाकीपन अधिक स्पष्ट होइत अछि। फगुआक रंग निजी रिक्तताकेँ ढाँकैत नहि, ओकर तीखापन बढ़बैत अछि।

'मोन ने लागय अहाँ बिना' पूर्ववर्ती विरहक अनेक छवि दोहरबैत अछि, मुदा उमेर-अन्तर आ विवाहक प्रस्तावक प्रति युवतीक प्रतिवचन जोड़ि अलग अर्थ उत्पन्न करैत अछि। समान मुखड़ा भिन्न कथात्मक अन्तसँ प्रेमगीतकेँ स्वीकृतिक प्रश्न बनाय सकैत अछि। एहि पाठ-सम्बन्धक आलोचना पुनरावृत्तिक दोषगणनाक बदला पाठान्तरक सामाजिक अर्थक परीक्षण होयबाक चाही।

२४. प्रेम, देह आ हास्यक पुरुष-दृष्टि

'दिल धड़कल आँखि फरकल'मे पत्नीक वापसी पति-वक्ताक अतिशयोक्तिपूर्ण घबराहट बनैत अछि; 'अहाँ हमर के छी'मे प्रियाक देह-सौन्दर्यक प्रशंसात्मक भाषामे प्रणय-आकांक्षा व्यक्त अछि; 'मधुर मधुर बाजय बाँसुरिया रे' राधा-कृष्णक गेय सन्दर्भमे आकर्षण आ ईर्ष्याक कोमल दृश्य बनबैत अछि। एकहि गीतखण्डमे पत्नी-परिहास, शृंगार आ सांस्कृतिक स्मृतिक भिन्न रूप अछि।

आलोचनाकेँ ई मानि नहि चलबाक चाही जे पुरुष-वक्ताक अनुभव स्त्री-पात्रक सम्पूर्ण सत्य अछि। हास्यक अधिकार आ स्त्रीक स्वतन्त्र कथनक अधिकार एक संग पढ़ल जाएब आवश्यक अछि। ई प्रश्न रचनाक कलात्मकता खारिज नहि करैत; उलट, ओकर सामाजिक रचना-प्रक्रिया, सम्बोधनक असमानता आ श्रोताक हँसीक दिश स्पष्ट करैत अछि।

सप्तम विभाग : हिन्दी नाटक, एकांकी आ स्मरणगीत

२५. 'सूनी सड़क' : सार्वजनिक स्थानक राजनीतिक उजाड़

हिन्दी नाटक 'सूनी सड़क'मे सड़क लोकजीवनक खुलल स्थानसँ भय आ दमनक रिक्त प्रदेशमे बदलैत अछि। जयक विरोध, राजकीय हिंसा, पुलिसक दबाव, पारिवारिक क्षति आ प्रतिशोध कथाकेँ तीव्र राजनीतिक त्रासदीक दिशा दैत अछि। ओहि कारण सड़क नामक स्थान स्वयं नाटकक प्रतीकात्मक केन्द्रीय चरित्र बनैत अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक अध्ययन उचित रूपेँ राजनीतिक हिंसाक दृश्य-विन्यास आ चरित्रक निर्णयकेँ फराक परखैत अछि। आदर्शवादी युवकक संघर्षकेँ केवल वीरगाथा मानब उचित नहि, तहिना प्रतिशोधकेँ न्याय मानबो उचित नहि। माएक चरम निर्णय, पुलिसक भिन्न भूमिका आ खिलौनाक रिवॉल्वरक भ्रम नाटकक नैतिक अस्थिरता खोलैत अछि।

२६. 'डम डम डिगा डिगा' : शिक्षित बेरोजगारी आ अपराधक हास्य

'डम डम डिगा डिगा'क छोट होटल समाजक परिवर्तित श्रम-बाजारक लघु मंच बनैत अछि। उच्चशिक्षित बेरोजगार युवक, तलवारी लाल, बालसहायक मनमाया आ अधिक सम्पन्न जीवनक पात्रसभक सम्बन्ध समान शिक्षा प्राप्ति आ असमान अवसरक अन्तर देखबैत अछि। गरीबी, हँसी, तुकबन्दी आ अपराधक सम्भावना एक विचित्र संयोग बनबैत अछि।

रचनाक संकट ई अछि जे बेरोजगारीक असुरक्षा चोर-अपहरणक हास्य-योजना धरि पहुँचैत अछि। सामाजिक संरचनाक आलोचना करैत समय अपराधक जिम्मेदारी पूर्णतः मेटा देब अनुचित अछि। एक पात्रक बालसहायक रूपमे उपस्थिती सेहो बाल-श्रम आ संरक्षणक प्रश्न उठबैत अछि। कथन-गति, व्यंग्य आ नैतिक परिणतिक आपसी अनुपात एहि नाटकक सुदृढ़ समालोचनाक आधार थिक।

२७. 'सहयोग' आ 'सुहागरात' : औद्योगिक आधुनिकता आ मंचक आत्मव्यंग्य

'सहयोग'मे फोरमैन मनोहर लाल कार्यस्थलपर सुरक्षा, अनुशासन आ समवेत जिम्मेदारीक पक्षधर छथि, मुदा परिवारक भीतर संवाद आ स्वायत्तताक प्रश्न कठिन बनैत अछि। सुरक्षागीतक आरम्भिक ध्वनि आ दुर्घटनाक बादक अन्तिम घरेलू संगीत सार्वजनिक नीति आ निजी व्यवहारक विरोधात्मक आवर्तन बनैत अछि।

'सुहागरात'मे रंगमंचीय पूर्वाभ्यासक 'डबल रोल', अभिभावकक दबाव, वेशभूषाक असंगति आ औद्योगिक प्रबन्धनक भाषा दाम्पत्यजीवनपर व्यंग्यात्मक ढंगसँ आरोपित होइत अछि। दुनू रचनाकेँ साथ पढ़ला पर

आधुनिक संस्थाक शब्दावलीक सीमासँ टकराव स्पष्ट होइत अछि : नियम जानब आ संवेदनशील सम्बन्ध निभायब समान कौशल नहि, मुदा दुनू आवश्यक अछि।

२८. 'साली को एक पत्र' आ दू स्मरणगीत : हास्यसँ विरह धरि

'साली को एक पत्र' घरेलू होली-निमन्त्रण आ महँग सामानक सूचीपर लिखल चुटीला प्रत्युत्तर अछि। रचनाक सामाजिक अर्थ नातेदारीक घनिष्ठतासँ उत्पन्न परिहास आ वास्तविक घरेलू आर्थिक दबावक बीच अछि। परिवारक भीतर लिखल पद्य पत्र सार्वजनिक मनोरंजनक भाषा ग्रहण करैत अछि, मुदा आत्मीयता आ लैंगिक मर्यादाक भेद सेहो जाँचबाक चाही।

'सब सपना बन के मिले'क सुख–दुःखक विरोधी बिम्ब आ 'चाहत तुम्हारी फिर से'क स्मृति–आशाक आवर्तन मृत्यु, अनुपस्थिति आ भावात्मक पुनर्जागरणक अलग स्वर खोलैत अछि। महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ ई जे पछिला गीत कुसुम ठाकुरक रचना बताओल गेल अछि; समग्र हिन्दी खण्डकेँ अविवेचित रूपेँ एकहि लेखकक नाम समर्पित नहि करबाक चाही। सम्पादकीय श्रेयक स्पष्टता सेहो साहित्यिक न्याय थिक।

अष्टम विभाग : साझा साहित्यिक प्रश्न आ समेकित निर्णय

२९. पद, विवाह आ श्रम : अलग विधामे लौटैत सत्ता-रचना

'बड़का साहेब'क पद-प्रतिष्ठा, 'लौंगिया मिरचाइ'क विवाह-बाजार, 'बकलेल'क श्रमसापेक्ष करुणा आ 'आदि वा अन्त'क ईमानदार अभियन्ता—ई चारि कथाभूमि अलग छथि, मुदा एक साझा प्रश्न उठबैत छथि : सामाजिक गरिमा ककरा भेटैत अछि? धन, शैक्षिक पदवी, पारिवारिक वर्चस्व आ पितृसत्तात्मक विवाह-संस्कार अक्सर व्यक्तिक नैतिक मूल्यक कृत्रिम माप बनि उठैत अछि।

गीतिनाटिकाक संक्षिप्त रूप ओही अन्यायकेँ संख्याक आवर्तन, लोक-उपमान आ प्रतिवचनसँ देखबैत अछि; एकांकी सभ घरक देहरी, कलाकारक तैयारी अथवा रहस्यमय वस्तुकेँ नैतिक बहसक मंच बनबैत अछि। एहि पारस्परिकता

सँ रचनाकारक आवर्ती सामाजिक चिन्ता स्पष्ट होइत अछि, मुदा कोनो एक सूत्रक नामपर भिन्न विधाक शिल्पकेँ मिटा देब साहित्यिक विवेक नहि।

३०. स्त्रीक निर्णयाधिकार आ आलोचनाक न्याय

मीना, मिक्की, डौली, कंचन आ आन स्त्री-पात्रक उपस्थिति एकरूप नहि। कियो न्यायपूर्ण सहायता जुटबैत छथि, कियो विवाहक पुरान वचन अस्वीकार करैत छथि, कियो आर्थिक संकटसँ डरैत छथि, कियो परिवारक निर्णय बदलैत छथि। ओहि भिन्नताकेँ स्वीकार केलासँ आधुनिकता, परम्परा आ स्त्री-स्वायत्तताक सरलीकृत विरोध टूटैत अछि।

गेय रचनामे बहुत बेर प्रियक बिम्ब उपस्थित अछि, मुदा ओकर अपन आवाज नहि। हास्यक पुरुष-केंद्रित स्वरकेँ जाँचब कलात्मक हँसीक निषेध नहि, ओकर सामाजिक दिशा बुझबाक आवश्यकता अछि। एहि खण्डक स्रोत-आधारित समीक्षा जहाँ एहि भेदपर ठहरैत अछि, ओतय ओकर उत्तरदायी महत्त्व बढ़ैत अछि; जतए स्त्रीक कथा केवल पुरुष-पात्रक नैतिक विकासक साधन बनैत अछि, ओतय पुनर्पाठ शेष रहैत अछि।

३१. रंगमंचक वस्तु, गीतक आवर्तन आ प्रमाणक सीमा

लल्लन प्रसाद ठाकुरक रंग-जगतमे फाटक, नामपट्ट, नियुक्तिपत्र, रसीद, सूटकेस, मुकुट, खसल रोटी आ बिल सन वस्तु अभिनय योग्य अर्थ रचैत अछि। एहि वस्तुसभकेँ संवादक सजावट मानलासँ नाटकक दृश्यगत श्रम अदृश्य भऽ जाइत अछि। तहिना गीतक मुखड़ा, ध्वन्यानुकरण आ फेर-फेर आबैत वाक्यांश कथनक गतिकेँ सम्भव बनबैत अछि।

मुदा मुद्रित पाठसँ प्रत्यक्ष प्रस्तुति-इतिहास नहि गढ़ल जा सकैत। कोनो नाटक मंचित भेल होयबाक सूचना ओकर अभिनय-सफलताक विवरण नहि; गीतक गेयता वास्तविक लोकधुनक प्रमाण नहि। एहन सीमा मानब स्रोत-समीक्षाक आवश्यक शर्त अछि। गजेन्द्र ठाकुरक उपलब्ध अध्ययनसभमे स्रोत-अनुशीलनक सूत्र उपस्थित अछि, आ एहि पुनर्पाठमे ओकरा स्पष्ट कसौटी बनाओल गेल अछि।

३२. साहित्यिक उपलब्धि, सीमा आ भविष्यक अनुसन्धान

संग्रहक प्रमुख साहित्यिक उपलब्धि समाजक नैतिक प्रश्नकेँ अनेक रंग-आ गीतात्मक माध्यममे व्यक्त करब अछि। खास कऽ कथाक अन्तमे नैतिक उलटफेर, घरेलू हास्यक भीतर आर्थिक दबाव, मंच-वस्तुक प्रतीकात्मक अर्थ, पद-अनुशासनक आलोचना, बालगीतक ध्वनि आ विरहगीतक वक्ताक बदलाव—ई सभ रचनाकारक व्यापक प्रयोगशीलताकेँ देखबैत अछि।

सीमा ओतए प्रकट होइत अछि जतए तीव्र उपदेश पात्रक स्वतन्त्रता घटा दैत अछि, स्त्री-पात्रक अनुभव पुरुष-दृष्टिमे सीमित भऽ जाइत अछि, सामाजिक परिवर्तन बहुत जल्दी घटैत अछि अथवा संस्थागत संकट व्यक्तिगत पश्चात्तापसँ समाप्त मानल जाइत अछि। आगाँक अनुसन्धान लेल मूल पाठक संस्करण-तुलना, अभिलेखित मंचन, ध्वनि-प्रदर्शन, पाठक-समुदाय आ भाषा-इतिहासक पृथक जाँच आवश्यक अछि।

३३. सम्पादकीय उपसंहार : बहुविध साहित्यक बहुस्वर परीक्षण

'नित नवल लल्लन प्रसाद ठाकुर'क आठ आलोचनात्मक अध्यायक महत्त्व ई अछि जे सामाजिक नाटक, हास्य-एकांकी, गीतिनाटिका, लोरी आ हिन्दी रचनाकेँ एक संयुक्त साहित्यिक विचारक क्षेत्रमे रखैत अछि। एकर भीतर मानव-सम्मानक प्रश्न मात्र नैतिक वाक्य नहि, परिवार, सत्ता, श्रम, भाषा, मंच, देह आ स्मृतिक ठोस रूपमे उपस्थित अछि।

एहि सम्पादकीय निर्णयमे कोनो रचनाकेँ पूर्ण सिद्धि अथवा पूर्ण असफलता घोषित करबाक आवश्यकता नहि। अधिक सार्थक ई अछि जे नाटकक दृश्यगति, गीतक आवर्तन, पात्रक व्यावहारिक विडम्बना आ स्रोत-सीमाक प्रति एक समान सजगता राखल जाए। तखने रचनाकारक व्यापक कृतित्व मैथिली आलोचनामे प्रचारात्मक सराहनासँ निकलि शोध, असहमति आ पुनर्पाठक स्थायी आधार बनत।

सन्दर्भ-विवरण

ठाकुर, गजेन्द्र। नित नवल लल्लन प्रसाद ठाकुर : नाटक, एकांकी, गीतिनाटिका, गीत-लोरी आ हिन्दी रचनाक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा। विदेह, सम्पादकीय संस्करण २०२७।

ठाकुर, लल्लन प्रसाद। नाटककार लल्लन प्रसाद ठाकुर रचनावली। सम्पादक : डॉ. प्रकाश झा। दिल्ली : मैलोरंग प्रकाशन, २०२२। (मूल अध्ययनक ग्रन्थसूचीमे निर्दिष्ट संस्करण।)

ठाकुर, कुसुम। 'लल्लन प्रसाद ठाकुरक नाटक।' विदेह मैथिली नाट्य उत्सव, २४ अगस्त २०११। (मूल अध्ययनमे उद्धृत रंगस्मृति।)

गॉफमैन, अर्विंग। The Presentation of Self in Everyday Life। १९५९। (उपलब्ध अध्ययनमे चर्चित सामाजिक भूमिकाक तुलनात्मक सन्दर्भ।)

बुर्दियू, पिएर। Language and Symbolic Power। १९९१। (उपलब्ध अध्ययनमे प्रयुक्त भाषिक प्रतिष्ठाक तुलनात्मक सन्दर्भ।)

विलियम्स, रेमण्ड। Drama in Performance। १९५४। (रंग-पाठ आ प्रस्तुतिक भेदक पद्धतिगत सन्दर्भ।)

ई सन्दर्भ-विवरण उपलब्ध समीक्षात्मक ग्रन्थक अध्ययन-सूत्र पर आधारित अछि; स्वतन्त्र पाठ-समीक्षण वा अभिलेखीय सत्यापनक दावा नहि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-८९

एहि खण्डमे गजेन्द्र ठाकुरक ‘नित नवल लल्लन प्रसाद ठाकुर’मे संकलित चारि मैथिली नाटक, चारि एकांकी, तीन गीतिनाटिका, तेरह गीत–लोरी आ हिन्दी रचनाक आलोचनात्मक अध्ययनसभक सम्पादकीय पुनर्पाठ प्रस्तुत अछि।

‘बड़का साहेब’, ‘लौंगिया मिरचाइ’, ‘बकलेल’ आ ‘आदि वा अन्त’क सामाजिक रंगशिल्प सँ ‘चन्दा’, ‘ग्रीन रूम’, ‘सूटकेस’ आ ‘मैथिली फिल्म’क व्यंग्य-विधान धरि पद, श्रम, दहेज, स्त्री-स्वायत्तता आ संस्थागत न्यायक प्रश्न जाँचल गेल अछि।

गीतिनाटिकाक आवर्तन, गीत–लोरीक स्वर, मैथिली भाषिक अस्मिता आ हिन्दी नाट्यरचनाक राजनीतिक तथा पारिवारिक संघर्षक मूल्यांकन अलग विधागत कसौटीपर कएल गेल अछि। ई अध्ययन मूल साहित्यिक कृतिसभक पूर्ण स्वतन्त्र सत्यापन नहि, उपलब्ध आलोचनाक स्रोत-सचेत सम्पादकीय पुनर्पाठ अछि।

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

मूल पाठ | विस्तृत आलोचना | सम्पादकीय निर्णय

विदेह

विदेह डिजिटल संग्रह

© 2027 Gajendra Thakur / Preeti Thakur